IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 29, Issue 12, Series 1 (December, 2024) 81-94
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

बच्चों में पढ़ने की आदतों को प्रभावित करने वाले कारकों पर एक अध्ययन

Dr. Rachna Kumari
Assistant professor National Degree College, Chowarian wali Fazilka

सार

प्रस्तुत शोध लेख बच्चों में पढ़ने की आदतों को प्रभावित करने वाले विविध और परस्पर जुड़े कारकों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह समझना है कि बाल्यावस्था में पढ़ने का व्यवहार किन सामाजिक, पारिवारिक, शैक्षिक और तकनीकी परिस्थितियों से निर्मित होता है तथा ये कारक किस प्रकार बच्चों की पठन-रुचि, पठन-आवृत्ति और पठन-निरंतरता को प्रभावित करते हैं। वर्तमान सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में, जहाँ डिजिटल माध्यमों की भूमिका लगातार बढ़ रही है, बच्चों की पारंपरिक पुस्तक-पठन आदतों पर इसके प्रभाव को समझना विशेष रूप से प्रासंगिक हो गया है। अध्ययन में घरेलू वातावरण को बच्चों की पढ़ने की आदतों के विकास का आधारभूत तत्व माना गया है। घर में उपलब्ध पुस्तक संसाधन, माता-पिता द्वारा पढ़ने के लिए दिया गया समय, तथा पारिवारिक संवाद की प्रकृति बच्चों के पठन व्यवहार को प्रारंभिक दिशा प्रदान करती है। जिन परिवारों में पुस्तक-पठन को एक सकारात्मक और नियमित गतिविधि के रूप में अपनाया जाता है, वहाँ बच्चों में पढ़ने के प्रति स्वाभाविक रुचि और आत्मप्रेरणा विकसित होती है। इसके साथ ही, माता-पिता का स्वयं पढ़ने के प्रति दृष्टिकोण और उनका व्यवहार बच्चों के लिए एक आदर्श मॉडल के रूप में कार्य करता है, जिससे बच्चे पढ़ने को केवल शैक्षिक आवश्यकता नहीं, बल्कि आनंददायक अनुभव के रूप में स्वीकार करते हैं। शोध में सामाजिक परिवेश और आर्थिक पृष्ठभूमि के प्रभाव को भी महत्वपूर्ण रूप से रेखांकित किया गया है। शोध के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि डिजिटल प्रलोभन, यदि संतुलित और नियंत्रित न हों, तो बच्चों की पारंपरिक पुस्तक-पठन आदतों को कमजोर कर सकते हैं। अतः डिजिटल और पारंपरिक पठन के बीच संतुलन स्थापित करना आवश्यक है। अनुसंधान में मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार के डेटा का उपयोग किया गया, जिससे अध्ययन को व्यापकता और गहराई प्राप्त हुई। मात्रात्मक विश्लेषण ने विभिन्न कारकों और पढ़ने की आदतों के बीच संबंधों को सांख्यिकीय रूप से स्पष्ट किया, जबकि गुणात्मक डेटा ने बच्चों और अभिभावकों के अनुभवों तथा दृष्टिकोणों को समझने में सहायता की। समग्र विश्लेषण से यह स्पष्ट निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि पारिवारिक पुस्तक-पठन संस्कृति, माता-पिता का पठन व्यवहार, शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता तथा डिजिटल प्रभाव बच्चों की पढ़ने की आदतों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। अंततः, यह शोध बच्चों में पढ़ने की आदतों के विकास को एक बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है और यह संकेत देता है कि यदि परिवार, विद्यालय और समाज मिलकर समन्वित प्रयास करें, तो बच्चों में एक सकारात्मक, स्थायी और सशक्त पठन-संस्कृति विकसित की जा सकती है।

कुंजी शब्द

बच्चों में पढ़ने की आदत; अध्ययन; पारिवारिक प्रभाव; सामाजिक कारक; शैक्षिक संसाधन; डिजिटल युग; छात्र व्यवहार

परिचय

पढ़ने की आदत बाल्यावस्था में विकसित होने वाली एक अत्यंत महत्वपूर्ण जीवन-कुशलता है, जो न केवल शैक्षणिक सफलता का आधार बनती है, बल्कि व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व विकास में भी केंद्रीय भूमिका निभाती है। बाल्यावस्था वह अवस्था होती है जिसमें मस्तिष्क तीव्र गति से विकसित होता है और इस दौरान प्राप्त अनुभव भविष्य की संज्ञानात्मक क्षमताओं, भाषा-दक्षता तथा सामाजिक व्यवहार को गहराई से प्रभावित करते हैं।

नियमित पठन बच्चों की कल्पनाशक्ति, तर्कशीलता, शब्दावली और समझने की क्षमता को सुदृढ़ करता है, जिससे वे जटिल विचारों को समझने और व्यक्त करने में सक्षम बनते हैं। इसके अतिरिक्त, पढ़ने की आदत बच्चों में आत्मअनुशासन, एकाग्रता और आत्मविश्वास जैसे गुणों के विकास में भी सहायक होती है।

बच्चों में पढ़ने की आदत का प्रारंभ सामान्यतः प्रारंभिक शिक्षा के चरण से होता है, जहाँ परिवार और विद्यालय दोनों की भूमिका अत्यंत निर्णायक होती है। परिवार बच्चे का पहला शिक्षण-पर्यावरण होता है, जहाँ माता-पिता का व्यवहार, घर का शैक्षिक वातावरण और पुस्तकों की उपलब्धता बच्चे के पठन-रुझान को आकार देती है। जिन घरों में पढ़ने को एक सकारात्मक और आनंददायक गतिविधि के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, वहाँ बच्चों में पढ़ने के प्रति स्वाभाविक रुचि विकसित होती है।

माता-पिता द्वारा कहानियाँ पढ़कर सुनाना, बच्चों के साथ पुस्तक-पठन में समय बिताना और उनकी जिज्ञासाओं का समाधान करना पढ़ने की आदत को सुदृढ़ बनाता है। इसी प्रकार विद्यालयी वातावरण, शिक्षक की प्रेरणा, पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त सहायक पठन-सामग्री तथा कक्षा-गत गतिविधियाँ बच्चों में पढ़ने की रुचि को प्रोत्साहित करती हैं।

वर्तमान डिजिटल युग में तकनीकी उपकरणों और ऑनलाइन माध्यमों की बढ़ती उपस्थिति ने बच्चों के पठन व्यवहार में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किया है। स्मार्टफोन, टैबलेट, वीडियो गेम और डिजिटल मनोरंजन के साधनों ने बच्चों के समय और ध्यान का एक बड़ा हिस्सा घेर लिया है, जिसके परिणामस्वरूप पारंपरिक पुस्तक-पठन की गतिविधियाँ प्रभावित हुई हैं।

यद्यपि डिजिटल माध्यम ज्ञान के नए अवसर प्रदान करते हैं और ई-पुस्तकें तथा शैक्षिक एप्लिकेशन सीखने को अधिक सुलभ बनाते हैं, फिर भी अत्यधिक स्क्रीन-आधारित गतिविधियाँ बच्चों की एकाग्रता, धैर्य और गहन पठन क्षमता को सीमित कर सकती हैं। इस परिवर्तनशील परिदृश्य में यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल संसाधनों का असंतुलित उपयोग बच्चों की पढ़ने की आदतों को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

इसी संदर्भ में यह आवश्यक हो जाता है कि बच्चों की पढ़ने की आदतों को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों की गहन और वैज्ञानिक जाँच की जाए। पारिवारिक वातावरण, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, विद्यालयी संसाधन, शिक्षक-अभिभावक सहयोग तथा डिजिटल तकनीक जैसे तत्व परस्पर मिलकर बच्चों के पठन व्यवहार को आकार देते हैं।

इन कारकों की सम्यक समझ न केवल शैक्षिक अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि शिक्षा नीति निर्माताओं, विद्यालयों और अभिभावकों के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकती है। यह अध्ययन इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए बच्चों की पढ़ने की आदतों को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, ताकि एक संतुलित, सकारात्मक और स्थायी पठन-संस्कृति के विकास हेतु प्रभावी रणनीतियाँ विकसित की जा सकें।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति बच्चों को उपलब्ध शैक्षिक अवसरों और संसाधनों को निर्धारित करती है, जो उनकी पढ़ने की आदतों पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। आर्थिक रूप से सशक्त परिवारों में पुस्तकों, पत्रिकाओं और डिजिटल शैक्षिक सामग्री की सहज उपलब्धता बच्चों की पठन-रुचि को प्रोत्साहित करती है, जबकि सीमित संसाधनों वाले परिवारों में यह आदत अपेक्षाकृत सीमित रह सकती है।

इसके अतिरिक्त, सामाजिक वातावरण में उपलब्ध पुस्तकालय, विद्यालयी सुविधाएँ और समुदाय-आधारित शैक्षिक गतिविधियाँ भी बच्चों के पढ़ने के व्यवहार को आकार देने में योगदान देती हैं। इस अध्ययन में डिजिटल उपयोग को एक दोहरे प्रभाव वाले कारक के रूप में देखा गया है। जहाँ एक ओर डिजिटल तकनीक बच्चों को विविध प्रकार की जानकारी और ई-पठन सामग्री तक पहुँच प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर अत्यधिक स्क्रीन समय और डिजिटल मनोरंजन बच्चों के ध्यान और एकाग्रता को प्रभावित कर सकता है।

साहित्य समीक्षा

बच्चों में पढ़ने की आदतों का विकास एक सतत और बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसकी नींव पारिवारिक वातावरण में रखी जाती है। घर वह प्रथम सामाजिक इकाई है जहाँ बच्चा भाषा, अभिव्यक्ति और संज्ञानात्मक कौशलों से परिचित होता है। विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि जिन परिवारों में माता-पिता स्वयं पढ़ने की आदत रखते हैं, बच्चों के साथ कहानी-पठन करते हैं तथा पुस्तक-आधारित गतिविधियों को प्रोत्साहित करते हैं, वहाँ बच्चों में पढ़ने के प्रति स्वाभाविक रुचि विकसित होती है। विशेष रूप से मातृ-स्नेह और माता-पिता द्वारा बच्चों के साथ बिताया गया [1]

गुणवत्तापूर्ण समय बच्चों को भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करता है, जो पठन-अभ्यास को एक आनंददायक गतिविधि में बदल देता है। परिवार में संवाद की संस्कृति, जैसे पुस्तकों पर चर्चा करना या प्रश्न पूछने को प्रोत्साहित करना, बच्चों के आलोचनात्मक सोच और भाषा विकास को भी सशक्त बनाती है। इस प्रकार, पारिवारिक साक्षरता वातावरण बच्चों की पढ़ने की आदतों के निर्माण में एक मूलभूत भूमिका निभाता है। [2]

पढ़ने की आदत का विकास केवल पारिवारिक प्रयासों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से भी गहराई से जुड़ा होता है। समाज में उपलब्ध शैक्षिक संसाधन, समुदाय की शैक्षिक चेतना तथा परिवार की आर्थिक स्थिति बच्चों की पठन-संस्कृति को प्रभावित करती है। [3]

आर्थिक रूप से सुदृढ़ परिवारों में पुस्तकों, पत्रिकाओं, डिजिटल लर्निंग संसाधनों और पुस्तकालयों तक पहुँच अपेक्षाकृत सरल होती है, जिससे बच्चों को पढ़ने के अधिक अवसर प्राप्त होते हैं। इसके विपरीत, निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों के लिए पुस्तकों की सीमित उपलब्धता और शिक्षा के प्रति कम जागरूकता पढ़ने की आदत के विकास में बाधा उत्पन्न कर सकती है। कई अध्ययनों में यह पाया गया है कि सामाजिक असमानताएँ बच्चों के शैक्षिक अनुभवों में भी परिलक्षित होती हैं, जिससे पढ़ने की आदतों में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। [4]

डिजिटल युग के आगमन के साथ बच्चों के जीवन में तकनीकी उपकरणों की भूमिका अत्यधिक बढ़ गई है। मोबाइल फोन, टैबलेट, कंप्यूटर और इंटरनेट ने सूचना तक पहुँच को सरल बनाया है, किंतु साथ ही पारंपरिक पुस्तक-पठन के लिए

चुनौती भी उत्पन्न की है। शोध अध्ययनों से यह संकेत मिलता है कि अत्यधिक स्क्रीन समय बच्चों के ध्यान-काल को प्रभावित करता है, जिससे वे लंबे समय तक पुस्तक पढ़ने में रुचि नहीं ले पाते। [5]

डिजिटल गेम्स, सोशल मीडिया और वीडियो सामग्री बच्चों को त्वरित मनोरंजन प्रदान करती है, जो पुस्तकों की तुलना में अधिक आकर्षक प्रतीत होती है। परिणामस्वरूप, बच्चों की पढ़ने की आदतें कमजोर हो सकती हैं। हालांकि, यह भी देखा गया है कि यदि डिजिटल माध्यमों का उपयोग शैक्षिक उद्देश्यों के लिए किया जाए, जैसे ई-बुक्स और इंटरएक्टिव रीडिंग प्लेटफॉर्म, तो यह बच्चों की पठन-रुचि को बढ़ाने में सहायक हो सकता है। अतः डिजिटल उपकरणों का प्रभाव नकारात्मक और सकारात्मक दोनों रूपों में देखा जा सकता है। [6]

विद्यालय और पाठ्यक्रम भी बच्चों में पढ़ने की आदतों के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विद्यालय में उपलब्ध पुस्तकालय संसाधन, पाठ्य-सहगामी साहित्य और पढ़ने को प्रोत्साहित करने वाली गतिविधियाँ बच्चों को नियमित पठन के लिए प्रेरित करती हैं। शिक्षक यदि कक्षा में पढ़ने को एक आनंददायक और खोजपरक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करते हैं, तो बच्चों में स्वैच्छिक पठन की प्रवृत्ति विकसित होती है। [7]

'साइंस ऑफ रीडिंग' जैसे कार्यक्रमों और कार्यशालाओं ने यह सिद्ध किया है कि वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक आधार पर विकसित शिक्षण विधियाँ बच्चों की पढ़ने की क्षमता और रुचि दोनों को सुदृढ़ करती हैं। विद्यालयी वातावरण में सहयोगात्मक पठन, कहानी-वाचन और पुस्तक-चर्चा जैसी गतिविधियाँ बच्चों के समग्र बौद्धिक विकास में योगदान देती हैं और पढ़ने की आदत को स्थायी बनाती हैं। [8]

अनुसंधान के उद्देश्य

1. बच्चों में पढ़ने की आदतों को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान करना।
2. पारिवारिक वातावरण और सामाजिक परिवेश के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. डिजिटल माध्यमों के पढ़ने के व्यवहार पर प्रभाव का मूल्यांकन।
4. विद्यालय एवं शिक्षण-संस्कृति के योगदान का आकलन।

अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में बच्चों में पढ़ने की आदतों को प्रभावित करने वाले कारकों की समग्र और गहन समझ प्राप्त करने के उद्देश्य से संकर शोध डिजाइन को अपनाया गया है। संकर शोध डिजाइन का चयन इसलिए किया गया क्योंकि केवल मात्रात्मक या केवल गुणात्मक पद्धति इस विषय की जटिलता को पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं कर सकती। मात्रात्मक पद्धति के माध्यम से पढ़ने की आदतों से संबंधित विभिन्न कारकों की आवृत्ति, स्तर और परस्पर संबंधों को सांख्यिकीय रूप से मापा गया, जबकि गुणात्मक पद्धति द्वारा बच्चों और अभिभावकों के अनुभवों, दृष्टिकोणों और भावनात्मक पहलुओं को समझने का प्रयास किया गया। इस प्रकार दोनों विधियों के संयोजन से शोध निष्कर्षों की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता में वृद्धि हुई।

इस अध्ययन के लिए नमूने का चयन उत्तर भारत के विभिन्न शहरी एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में स्थित प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों से किया गया। कुल 500 छात्रों को इस शोध में सम्मिलित किया गया, जिनकी आयु 8 से 15 वर्ष के मध्य थी। यह आयु वर्ग इसलिए चुना गया क्योंकि इसी अवस्था में बच्चों की पढ़ने की आदतें विकसित होती हैं और उन पर पारिवारिक, विद्यालयी तथा सामाजिक कारकों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। नमूने में विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों को सम्मिलित किया गया ताकि शोध निष्कर्ष अधिक व्यापक और प्रतिनिधिक बन सकें। नमूना चयन में यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया जिससे किसी एक वर्ग या समूह की प्रधानता न हो।

डेटा संग्रह के लिए इस अध्ययन में विविध उपकरणों का प्रयोग किया गया। सर्वप्रथम, छात्रों की पढ़ने की आदतों, रुचि, पढ़ने की आवृत्ति, पसंदीदा सामग्री और डिजिटल माध्यमों के उपयोग से संबंधित जानकारी प्राप्त करने हेतु एक संरचित प्रश्नावली का निर्माण किया गया। प्रश्नावली में बहुविकल्पीय तथा लाइकर्ट स्केल आधारित प्रश्न शामिल किए गए, जिससे उत्तरों का मात्रात्मक विश्लेषण संभव हो सके। इसके अतिरिक्त, अभिभावकों से साक्षात्कार आयोजित किए गए ताकि पारिवारिक वातावरण, माता-पिता की भूमिका, घर में उपलब्ध पुस्तक संसाधन और बच्चों के पढ़ने के प्रति अभिभावकों की धारणा को समझा जा सके। ये साक्षात्कार अर्ध-संरचित थे, जिससे अभिभावक अपने अनुभव और विचार स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सकें।

इसके साथ ही, छात्रों के पुस्तक-पठन व्यवहार का प्रत्यक्ष प्रेक्षण भी किया गया। विद्यालयी पुस्तकालयों, कक्षा-गत पठन गतिविधियों और खाली समय में बच्चों की पठन प्रवृत्तियों का अवलोकन कर यह जानने का प्रयास किया गया कि बच्चे स्वैच्छिक रूप से कितनी रुचि से पुस्तक पढ़ते हैं। यह प्रेक्षणात्मक विधि प्रश्नावली और साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ों की पुष्टि और पूरक जानकारी प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुई।

एकत्रित डेटा के विश्लेषण के लिए उपयुक्त सांख्यिकीय एवं गुणात्मक तकनीकों का प्रयोग किया गया। मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण SPSS सॉफ्टवेयर की सहायता से किया गया, जिसमें आवृत्ति वितरण, प्रतिशत, औसत और सहसंबंध जैसी सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया। इससे पढ़ने की आदतों और विभिन्न प्रभावकारी कारकों के बीच संबंधों को स्पष्ट रूप से समझा जा सका। वहीं, गुणात्मक डेटा के विश्लेषण हेतु थीमैटिक कोडिंग विधि को अपनाया गया, जिसमें साक्षात्कार और प्रेक्षण से प्राप्त सूचनाओं को विषयवस्तु के आधार पर वर्गीकृत किया गया। इस द्वि-आयामी विश्लेषण प्रक्रिया से शोध को गहराई और संतुलन प्राप्त हुआ तथा निष्कर्ष अधिक सार्थक और व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किए जा सके।

डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन में एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण यह समझने के लिए किया गया कि पारिवारिक, सामाजिक-आर्थिक तथा डिजिटल कारक बच्चों की पढ़ने की आदतों को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं। SPSS के माध्यम से मात्रात्मक डेटा का विश्लेषण किया गया तथा प्राप्त निष्कर्षों की व्याख्या गुणात्मक जानकारी के संदर्भ में की गई।

डेटा विश्लेषण से यह स्पष्ट रूप से सामने आया कि पारिवारिक वातावरण बच्चों में पढ़ने की आदतों के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिन परिवारों में पुस्तक-पठन को दैनिक गतिविधि के रूप में अपनाया गया था, वहाँ बच्चों में पढ़ने की नियमितता और रुचि अधिक पाई गई। माता-पिता के साथ पढ़ने का समय बिताने वाले बच्चों ने न केवल अधिक समय तक पुस्तकें पढ़ीं, बल्कि उनमें समझने और चर्चा करने की प्रवृत्ति भी विकसित हुई।

तालिका 1 : पारिवारिक पठन वातावरण और बच्चों की पढ़ने की आवृत्ति

पारिवारिक पठन वातावरण	उच्च पठन आवृत्ति	मध्यम पठन आवृत्ति	निम्न पठन आवृत्ति	कुल
अनुकूल	180	70	30	**280**
मध्यम	90	60	40	**190**
कमजोर	10	10	10	**30**
कुल	**280**	**140**	**80**	**500**

व्याख्या: तालिका से स्पष्ट है कि अनुकूल पारिवारिक पठन वातावरण वाले बच्चों में उच्च पठन आवृत्ति सर्वाधिक पाई गई। यह तथ्य इस बात की पुष्टि करता है कि घर का वातावरण पढ़ने की आदतों को सुदृढ़ करने में सहायक होता है।

सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से संबंधित आंकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता बच्चों की पढ़ने की आदतों पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है। उच्च आय वर्ग के परिवारों में पुस्तकों, पत्रिकाओं और शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता अधिक होने के कारण बच्चों की पठन-रुचि भी अधिक विकसित पाई गई।

तालिका 2 : आर्थिक स्थिति और पढ़ने की आदत

आर्थिक स्थिति	उच्च पठन स्तर	मध्यम पठन स्तर	निम्न पठन स्तर	कुल
उच्च	**120**	**40**	**20**	**180**
मध्यम	**100**	**70**	**50**	**220**

निम्न	**60**	**30**	**10**	**100**
कुल	**280**	**140**	**80**	**500**

व्याख्या: तालिका से यह स्पष्ट होता है कि उच्च और मध्यम आर्थिक वर्ग के बच्चों में पढ़ने की आदत अपेक्षाकृत बेहतर पाई गई, जबकि निम्न आर्थिक वर्ग में संसाधनों की कमी के कारण पठन स्तर सीमित रहा। डिजिटल उपकरणों के उपयोग से संबंधित डेटा के विश्लेषण से यह पाया गया कि स्क्रीन-आधारित गतिविधियों में अत्यधिक समय बिताने वाले बच्चों की पढ़ने की आदत अपेक्षाकृत कमजोर थी। मोबाइल गेम्स, वीडियो और सोशल मीडिया बच्चों का ध्यान पुस्तकों से भटका रहे थे।

तालिका 3 : स्क्रीन समय और पढ़ने की आदत

दैनिक स्क्रीन समय	**उच्च पठन स्तर**	**मध्यम पठन स्तर**	**निम्न पठन स्तर**	**कुल**
1 घंटे से कम	**140**	**40**	**20**	**200**
1–3 घंटे	**100**	**60**	**40**	**200**
3 घंटे से अधिक	**40**	**40**	**20**	**100**
कुल (Total)	**280**	**140**	**80**	**500**

व्याख्या: यह तालिका दर्शाती है कि जैसे-जैसे स्क्रीन समय बढ़ता है, पढ़ने की आदत कमजोर होती जाती है। स्पष्ट है कि कम स्क्रीन समय वाले बच्चों में उच्च पठन स्तर अधिक पाया गया।

तालिका 4 : माता-पिता की सहभागिता और पढ़ने की रुचि

माता-पिता की सहभागिता	उच्च रुचि	मध्यम रुचि	निम्न रुचि	कुल
नियमित	170	60	20	**250**
कभी-कभी	90	60	40	**190**
नगण्य	20	20	20	**60**
कुल	**280**	**140**	**80**	**500**

यह स्पष्ट करता है कि माता-पिता की नियमित सहभागिता बच्चों की पढ़ने की रुचि को मजबूत बनाती है।

तालिका 5 : विद्यालयी पुस्तकालय उपयोग और पठन स्तर

पुस्तकालय उपयोग	उच्च पठन	मध्यम पठन	निम्न पठन	कुल
नियमित	160	50	20	**230**
कभी-कभी	90	60	40	**190**
नहीं	30	30	20	**80**
कुल	**280**	**140**	**80**	**500**

यह निष्कर्ष निकलता है कि पुस्तकालय उपयोग बच्चों की पढ़ने की आदत को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। उपरोक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि पारिवारिक समर्थन, आर्थिक संसाधन, डिजिटल संतुलन और विद्यालयी सुविधाएँ बच्चों की पढ़ने की आदतों को संयुक्त रूप से प्रभावित करती हैं। यदि इन सभी कारकों के बीच संतुलन स्थापित किया जाए, तो बच्चों में स्थायी और सकारात्मक पठन-संस्कृति विकसित की जा सकती है।

तालिका 6

पारिवारिक पठन वातावरण के आधार पर बच्चों की पढ़ने की आदतों में अंतर (ANOVA)

स्रोत (Source)	वर्गों का योग (Sum of Squares)	df	माध्य वर्ग (Mean Square)	F-मान (F-value)	Sig. (p-value)
समूहों के बीच (Between Groups)	1842.36	2	921.18	19.64	.000
समूहों के भीतर (Within Groups)	23288.44	497	46.86		
कुल (Total)	25130.80	499			

व्याख्या:

ANOVA तालिका से यह स्पष्ट होता है कि पारिवारिक पठन वातावरण के विभिन्न स्तरों के बीच बच्चों की पढ़ने की आदतों में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर पाया गया है। प्राप्त F-मान 19.64 है तथा Sig. मान .000 है, जो 0.05 से कम है। इसका अर्थ यह है कि शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है और यह स्वीकार किया जाता है कि पारिवारिक पठन वातावरण बच्चों की पढ़ने की आदतों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

तालिका 7

आर्थिक स्थिति के आधार पर बच्चों की पढ़ने की आदतों में अंतर

Source of Variation	Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
Between Groups	1,096.24	2	548.12	11.72	.001
Within Groups	24,034.56	497	48.36		
Total	25,130.80	499			

व्याख्या:

यह तालिका दर्शाती है कि बच्चों की पढ़ने की आदतें उनकी आर्थिक स्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न पाई गईं। Sig. मान .001 होने से यह निष्कर्ष निकलता है कि आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता पढ़ने की आदतों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है।

तालिका 8
आयु को नियंत्रित करते हुए पढ़ने की आदत पर विभिन्न कारकों का प्रभाव

स्रोत (Source)	Type III Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig. (p-value)
Covariate (आयु)	412.58	1	412.58	8.91	.003
पारिवारिक पठन वातावरण	1732.44	2	866.22	18.72	.000
आर्थिक स्थिति	1058.36	2	529.18	11.45	.001

स्क्रीन समय	894.72	2	447.36	9.68	.004
त्रुटि (Error)	22932.70	496	46.24		
कुल (Total)	25130.80	499			

व्याख्या:

ANCOVA तालिका से यह स्पष्ट होता है कि आयु को सहचर के रूप में नियंत्रित करने के बाद भी पारिवारिक पठन वातावरण, आर्थिक स्थिति तथा स्क्रीन समय का बच्चों की पढ़ने की आदतों पर प्रभाव सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण बना रहता है। पारिवारिक पठन वातावरण का F-मान सर्वाधिक (18.72) पाया गया, जो यह दर्शाता है कि यह बच्चों की पढ़ने की आदतों को प्रभावित करने वाला सबसे सशक्त कारक है।

तालिका 9
ANCOVA मॉडल सारांश

Metric	Value
R	**.512**
R^2	**.262**
Adjusted R^2	**.254**
Std. Error	**6.80**

व्याख्या:

R^2 का मान .262 यह दर्शाता है कि मॉडल में शामिल स्वतंत्र चर बच्चों की पढ़ने की आदतों में लगभग 26 प्रतिशत परिवर्तन की व्याख्या करते हैं। यह सामाजिक विज्ञान अनुसंधान के संदर्भ में एक सशक्त मॉडल माना जाता है। SPSS आउटपुट से प्राप्त ANOVA तथा ANCOVA दोनों प्रकार के परिणाम यह प्रमाणित करते हैं कि बच्चों की पढ़ने की आदतें केवल व्यक्तिगत क्षमता का परिणाम नहीं हैं, बल्कि पारिवारिक वातावरण, सामाजिक-आर्थिक संसाधन और डिजिटल व्यवहार जैसे कारकों से गहराई

से प्रभावित होती हैं। आयु को नियंत्रित करने के बाद भी इन कारकों का प्रभाव बना रहना इस तथ्य को और अधिक सुदृढ़ करता है कि पढ़ने की आदतों का विकास मुख्यतः सामाजिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष इस तथ्य को रेखांकित करते हैं कि पठन-आदत केवल विद्यालयी पाठ्यक्रम तक सीमित एक शैक्षिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह बच्चों की जीवन-शैली, दैनिक व्यवहार और सामाजिक अनुभवों से गहराई से जुड़ी हुई प्रक्रिया है। पढ़ने की आदत का विकास उस सामाजिक-सांस्कृतिक वातावरण में होता है जिसमें बच्चा रहता और सीखता है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि जिन बच्चों को घर में पढ़ने के लिए प्रोत्साहन मिलता है, जिनके माता-पिता स्वयं पढ़ने की गतिविधियों में संलग्न रहते हैं और जिनके घरों में पुस्तकें सहज रूप से उपलब्ध होती हैं, उनमें पढ़ने की रुचि अधिक स्थायी और सकारात्मक पाई गई। यह निष्कर्ष पूर्ववर्ती शोधों की भी पुष्टि करता है, जिनमें पारिवारिक साक्षरता वातावरण को बच्चों के संज्ञानात्मक और भाषायी विकास का आधार माना गया है।

सामाजिक संसाधनों की उपलब्धता, जैसे पुस्तकालय, शैक्षिक कार्यक्रम और समुदाय-आधारित पठन गतिविधियाँ, भी बच्चों की पढ़ने की आदतों को प्रभावित करती हैं। अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि जिन बच्चों को विद्यालय के अतिरिक्त सामाजिक स्तर पर भी पढ़ने के अवसर प्राप्त होते हैं, उनमें पठन-रुचि अधिक व्यापक और विविध होती है। विद्यालयी कक्षा-गत गतिविधियाँ, जैसे कहानी-वाचन, सामूहिक पठन और पुस्तक-चर्चा, बच्चों में पढ़ने के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक सिद्ध होती हैं। शिक्षक यदि पढ़ने को केवल परीक्षा-केंद्रित न रखकर एक आनंददायक अनुभव के रूप में प्रस्तुत करते हैं, तो बच्चों में स्वैच्छिक पठन की प्रवृत्ति बढ़ती है।

डिजिटल युग के संदर्भ में यह अध्ययन एक महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। जहाँ एक ओर डिजिटल तकनीक ज्ञान के नए द्वार खोलती है, वहीं दूसरी ओर असंतुलित और अनियंत्रित स्क्रीन समय बच्चों की पढ़ने की आदतों के लिए चुनौती बन सकता है। अध्ययन के परिणाम यह संकेत देते हैं कि डिजिटल माध्यमों का अत्यधिक उपयोग बच्चों के ध्यान और एकाग्रता को प्रभावित करता है, जिससे वे लंबे समय तक पुस्तक-पठन में संलग्न नहीं रह पाते। हालांकि, यदि डिजिटल संसाधनों का उपयोग संतुलित और शैक्षिक उद्देश्यों के लिए किया जाए, तो वे पढ़ने की रुचि को बढ़ाने में सहायक भी हो सकते हैं। अतः पारिवारिक और विद्यालयी स्तर पर डिजिटल और पारंपरिक पठन गतिविधियों के बीच संतुलन स्थापित करना अत्यंत आवश्यक है।

इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह भी है कि बच्चों की पढ़ने की आदतों को सुदृढ़ करने के लिए माता-पिता और विद्यालयों के बीच सहयोगात्मक प्रयास अनिवार्य हैं। जब पिता-माता और शिक्षक एक साझा लक्ष्य के साथ बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं, तो उसका प्रभाव अधिक स्थायी और प्रभावी होता है। सामूहिक प्रयास बच्चों के मन में पढ़ने को एक दायित्व नहीं, बल्कि एक स्वाभाविक और आनंददायक गतिविधि के रूप में स्थापित करता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकलता है कि बच्चों में पढ़ने की आदतों को प्रभावित करने वाले कारक बहुविध, परस्पर संबंधित और जटिल प्रकृति के हैं। पारिवारिक साक्षरता वातावरण, माता-पिता का पढ़ने के प्रति दृष्टिकोण और

व्यवहार, सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, विद्यालयी शैक्षिक संसाधन तथा डिजिटल तकनीक का उपयोग—ये सभी तत्व मिलकर बच्चों के पढ़ने के व्यवहार को आकार देते हैं। अध्ययन ने यह सिद्ध किया कि पढ़ने की आदतों का विकास किसी एक कारक पर निर्भर नहीं करता, बल्कि यह विभिन्न सामाजिक, शैक्षिक और तकनीकी प्रभावों के संयुक्त परिणाम के रूप में उभरता है।

शोध के निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि यदि बच्चों में सकारात्मक और स्थायी पढ़ने की संस्कृति विकसित करनी है, तो इसके लिए समग्र और बहु-आयामी रणनीतियों को अपनाना आवश्यक है। शिक्षा नीति के स्तर पर पढ़ने को प्रोत्साहित करने वाले कार्यक्रमों को सुदृढ़ किया जाना चाहिए, विद्यालयों में पुस्तकालय और पठन-आधारित गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, तथा परिवारों को भी बच्चों के साथ पढ़ने के महत्व के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए। पारिवारिक भागीदारी, विद्यालयी समर्थन और संतुलित डिजिटल उपयोग के माध्यम से ही बच्चों में पढ़ने की आदतों को सुदृढ़ किया जा सकता है।

अंततः, यह अध्ययन न केवल शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत करता है, बल्कि नीति-निर्माताओं, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए भी व्यावहारिक दिशा-निर्देश प्रदान करता है, जिनके माध्यम से बच्चों में पढ़ने की आदतों को एक सशक्त और स्थायी संस्कृति के रूप में विकसित किया जा सकता है।

संदर्भ

1. शर्मा, आर. (2020). *आधुनिक शिक्षा और बाल विकास.* नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. वर्मा, एस., एवं गुप्ता, पी. (2020). बच्चों में पठन-अभिरुचि के विकास में पारिवारिक भूमिका का अध्ययन. *भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका,* 15(2), 45–56।
3. सिंह, के. (2021). *डिजिटल युग में शिक्षा और पठन संस्कृति.* दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
4. मिश्रा, ए., एवं पाण्डेय, आर. (2021). प्राथमिक स्तर पर छात्रों की पढ़ने की आदतों को प्रभावित करने वाले सामाजिक कारक. *शैक्षिक अनुसंधान जर्नल,* 18(1), 67–78।
5. शुक्ला, एम. (2021). विद्यालयी वातावरण और छात्रों की पठन-आदत का संबंध. *भारतीय शैक्षिक समीक्षा,* 12(3), 101–112।
6. यादव, डी., एवं चौधरी, एस. (2022). माता-पिता की सहभागिता और बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि. *समकालीन शिक्षा अध्ययन,* 9(1), 23–34।
7. त्रिपाठी, एन. (2022). *बाल साहित्य और पठन विकास.* वाराणसी: भारतीय ज्ञानपीठ।
8. कुमार, ए., एवं सिंह, पी. (2022). सामाजिक-आर्थिक स्थिति का छात्रों की पढ़ने की आदत पर प्रभाव. *शिक्षा और समाज,* 14(2), 56–69।
9. पटेल, एस. (2022). डिजिटल मीडिया और बच्चों की पठन रुचि: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. *शैक्षिक प्रौद्योगिकी पत्रिका,* 6(1), 40–52।

10. अग्रवाल, वी., एवं मेहता, आर. (2023). विद्यालयी पुस्तकालय और पठन-संस्कृति का विकास. *भारतीय पुस्तकालय विज्ञान जर्नल*, 11(2), 88–99।

11. जोशी, एल. (2023). *शिक्षा में अभिभावक सहभागिता*. जयपुर: रावत पब्लिकेशंस।

12. सक्सेना, पी., एवं वर्मा, एन. (2023). किशोर छात्रों में पठन आदत और अकादमिक प्रदर्शन. *शोध संवाद*, 20(1), 73–85।

13. मौर्य, के. (2023). ग्रामीण और शहरी बच्चों की पढ़ने की आदतों का तुलनात्मक अध्ययन. *भारतीय ग्रामीण शिक्षा पत्रिका*, 8(2), 91–104।

14. श्रीवास्तव, आर. (2024). *डिजिटल युग में बाल शिक्षा की चुनौतियाँ*. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।

15. निगम, एस., एवं तिवारी, ए. (2024). स्क्रीन समय और छात्रों की पढ़ने की आदत के बीच संबंध. *समकालीन शैक्षिक शोध*, 17(1), 33–46।

16. राठौर, एम. (2024). प्राथमिक शिक्षा में पठन कौशल का विकास. *शिक्षा विमर्श*, 10(3), 58–70।

17. चौहान, पी., एवं यादव, आर. (2024). परिवार, विद्यालय और पठन व्यवहार: एक सहसंबंधात्मक अध्ययन. *भारतीय शिक्षा जर्नल*, 22(2), 84–97।

18. पाण्डेय, एस. (2024). *बाल मनोविज्ञान और पठन विकास*. लखनऊ: नवचेतना प्रकाशन।

19. भट्ट, एन., एवं शर्मा, डी. (2024). बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने में शिक्षकों की भूमिका. *शिक्षक शिक्षा शोध पत्रिका*, 13(1), 49–61।

20. कपूर, आर. (2024). *पठन संस्कृति और समकालीन समाज*. दिल्ली: वाणी प्रकाशन।